"तीर्थ"

• अंतर मैल जे तीरथ नावे तिस बैकुंठ न जाना। लोक पतीणे कछु न होवे नाही राम अयाना।

अर्थ:- अगर मन में विकारों की मैल भी टिकी रहे और कोई मनुष्य तीर्थों पर नहाता फिरे, तो इस तरह उसने स्वर्ग में नहीं जा पहुँचना तीर्थों पर नहाने से लोग तो कहने लग पड़ेंगे कि ये भक्त है, पर लोगों के पतीजने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि परमात्मा जो हरेक के दिल की जानता है अंजान नहीं है।

पूजहु राम एक ही देवा । साचा नावण गुरू की सेवा ।

अर्थः- गुरु के बताए मार्ग पर चलना ही असल तीर्थ स्नान है । सो एक परमात्मा देव का भजन करो ।

जल के मजन जे गति होवै नित नित मेंढक नावहि । जैसे मेंढक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ।

अर्थः- पानी में डुबकियां लगाने से अगर मुक्ति मिल सकती होती तो मेंडक सदा ही नहाते हैं । जैसे वह मेंढक हैं वैसे वे मनुष्य समझो पर, नाम के बिना वो सदा जूनियों में पड़े रहते हैं ।

मनहु कठोर मरै बानारस नरक न बाचिआ जाई । हरि का संत मरै हाड़बै त सगली सैन तराई।

अर्थः- अगर मनुष्य काशी में शरीर त्यागे, पर मन में कठोर हो, तो इस तरह उसका नर्क में जाना छूट नहीं सकता । दूसरी तरफ परमात्मा का भक्त मगहर की श्रापित धरती में भी अगर जा मरे, तो वह बल्कि और सारे लोगों को भी पार लंघा लेता है ।

दिनसं न रैन बेद नही सासत्र तहा बसै निरंकारा । कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा । (कबीर-४४५)

अर्थः- कबीर कहता है हे मनुष्यो हे कमले लोगो उस परमात्मा को ही स्मरण करो । वह वहाँ बसता है जहाँ दिन और रात नहीं, जहाँ वेद नहीं, जहाँ शास्त्र नहीं भाव वह प्रभु उस आत्मिक अवस्था में पहुँच के मिलता है, जो आत्मिक अवस्था किसी खास समय की मुहताज नहीं, किसी खास धर्म - पुस्तक की मुहताज नहीं ।

• मन मैले सभ किछ मैला तन धोते मन हछा न होइ । इह जगत भरम भुलाइआ विरला बूझै कोई ।

अर्थः- हे भाई ! अगर मनुष्य का मन विकारों की मैल से भरा रहे तो उतने वक्त मनुष्य जो कुछ करता है सब कुछ विकार ही करता है, शरीर को तीर्थ आदि के स्नान करवाने से मन पवित्र नहीं हो सकता । पर ये संसार तीर्थ - स्नान आदि से मन की पवित्रता मिल जाने के भुलेखे में पड़ के गलत राह पर चला जा रहा है । कोई दुर्लभ मनुष्य ही इस सच्चाई को समझता है ।

जप मन मेरे तू एको नाम । सतिगुरि दीआ मोकउ एहु निधान । (5-558)

अर्थः- हे मेरे मन ! तू विकारों से बचने के लिए सिर्फ परमात्मा का नाम जपा कर । यह नाम खजाना गुरु ने बख्शा है ।

• कोटि तीरथ मजन इसनाना इस कलि महि मैल भरीजै । साध संग जो हरि गुण गावै सो निरमल कर लीजै । (5-747)

अर्थः- हे भाई ! करोड़ों तीर्थ - स्नान करते हुए भी जगत में विकारों की मैल लिबड़ जाती है । पर जो मनुष्य गुरु की संगति में टिक के परमात्मा की महिमा के गीत गाता रहता है, वह पवित्र जीवन वाला बन जाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"